राम नवमी पर हार्दिक बधाई

दशरथ के शुभ धाम में, प्रकटे अतुलित धाम।
जीव जगत हित कामना, लेकर नित्य अकाम। ।
लेकर नित्य अकाम, काम लज्जित वपु द्युति से।
सुर गण तक हैं भ्रमित, ब्रह्म माया की युति से।
सकल लोक विश्राम, निखिल संसृति सुख दायक।
हरने गुर्वी भार कोटि ब्रह्मांड विधायक। ।

कौशलेश पुर धन्य जो, उदित भानु कुल भानु।
सद्यः जगत त्रिताप हर, असुर अरण्य कृशानु।
असुर अरण्य कृशानु, चापधर धृत खर सायक।
दनुज त्रास हरणार्थ, प्रकट देखो सुर नायक।
धर्म वृषभ गत भीति, पयस्विनि धरा मुदित है।
मुनि उर चातक व्यग्र, भक्ति पीयूष क्षुधित है।।

तिरोधान को बाध्य सा, तिमिर तज रहा आस।
बढा अरुणिमा साथ ही, प्राची का विश्वास।
प्राची का विश्वास, सनीर न नयन रहेंगे।
अब अनाथ वत आर्य, न आसुर घात सहेंगे।
अबला धर्षण नहीं, न होगा अध्वर दूषण।
वसुधा पर बलमत्त, न घूंमेंगे खर दूषण। ।

भोपाल
चैत्र शुक्ल नवमी। शिव कुमार

2081 विक्रम